(□□□□□□□□□ 31:30 □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□)

> □□□□□□□□ 31:30 □□□ □□□□ □□:
>
> “□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□; □□ □□□ □□□□□ □□□□□—□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□” *(□□□□□□□□ 31:30)*

□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□

□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□?
□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□:

> “□□□□-□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□” *(□□□□□□□□ 31:29)*

□□□□ □□□□ □□: “□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□”

“जो खाए खट्टा अंगूर—उसके दांत खराब हो जाएंगे”

लोग पुरानी पीढ़ी को वर्तमान पीढ़ी की समस्याओं के लिए दोषी ठहरा रहे थे। लेकिन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के माध्यम से इस सोच को सुधार दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि हर व्यक्ति अपने पाप के लिए जिम्मेदार है।

परमेश्वर न्यायी है (व्यवस्थाविवरण 32:4), और उसकी न्यायप्रियता निर्दोषों को दूसरों के पापों के कारण दंडित नहीं करती। यह उसके नैतिक चरित्र को दर्शाता है कि वह “किसी के प्रति पक्षपात नहीं करता” (रोमियों 2:11)।

हालांकि पाप के प्रभाव पीढ़ियों तक पहुंच सकते हैं (जैसे कि निर्गमन 20:5 में), परमेश्वर यहां स्पष्ट करते हैं कि पाप का दंड वंशानुगत नहीं है। यह बात फिर से स्पष्ट होती है:

येजेकिएल 18:20
“जो पाप करता है वही मरेगा। पुत्र पिता के पाप का दंड नहीं भरेगा, और पिता पुत्र के पाप का दंड नहीं भरेगा…”

संक्षेप में, परमेश्वर कह रहे थे: “अपने माता-पिता को दोष देना बंद करो। तुम्हारा मुझसे संबंध तुम्हारे अपने फैसलों पर निर्भर है।”

“जो खाए खट्टा अंगूर —उसके दांत खराब हो जाएंगे ”

󠁿 खट्टे अंगूर का उदाहरण क्यों ?

खट्टे अंगूर का उदाहरण एक रूपक है। जैसे कोई खट्टा फल खाए तो उसके अपने दांत उस पर प्रतिक्रिया देते हैं। यह अनुचित है कि कोई दूसरा उस फल के कारण कष्ट झेले जो तुमने खाया है। इसी तरह पाप और न्याय के मामले में भी हर कोई अपने कर्मों का परिणाम भुगतता है।

यह रूपक दर्शाता है कि परमेश्वर का न्याय व्यक्तिगत और निष्पक्ष है। वह व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के आधार पर न्याय करता है, न कि परिवार या जनजाति के आधार पर।

󠁿 नए संधि का वादा (यिर्मयाह 31:31–34)

परमेश्वर ने उनकी गलत धारणा को सुधारने तक सीमित नहीं रखा – उन्होंने उन्हें आशा दी। उन्होंने अपने लोगों के साथ एक नए प्रकार के संबंध का वादा किया:

> यिर्मयाह *31:31–33*
> “देखो, ऐसे दिन आएंगे, यहोवा की वाणी है, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ नया संधि करूँगा।
> यह वह संधि नहीं होगी जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी,
> जब मैंने उन्हें मिस्र से बाहर निकाला था।
> बल्कि यह संधि मैं इस प्रकार करूँगा*:*
> मैं अपना नियम उनके मन में डालूँगा और उनके दिलों पर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

> □□□□□□□□□
> □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□”

□□□□ □□□□:
□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ (□□□□□ □□□□□□□□□□ 8:6–13)□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□:

- □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ (□□□□□□□ 8:4–9)□
- □□□□□□ □□□□□□□□□ □□—□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□, □ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ (□□□□□□□ 1:12–13, □□□□□□□ 10:9–10)□
- □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□

□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□
□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□

> □□□□□ □□□□□□□□□ *6:5* □□□□ □□:

“जो खाए खट्टा अंगूर—उसके दांत खराब हो जाएंगे”

“प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी बोझ उठाए।”

परमेश्वर के राज्य में, आप अपने माता-पिता, पादरी या संस्कृति के द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते। हर कोई अपने जीवन और परमेश्वर की कृपा पर अपनी प्रतिक्रिया के आधार पर खड़ा होगा।

आज हमारे लिए इसका क्या मतलब है?

अपने जीवन की व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के सामने लें।
बहाने बनाना या दूसरों को दोष देना छोड़ दें।
सुसमाचार पर व्यक्तिगत रूप से प्रतिक्रिया दें।
यीशु हर उस व्यक्ति को क्षमा और नया दिल देता है जो विश्वास से उसके पास आता है।
यह सत्य साझा करें।
कई लोग अभी भी सोचते हैं कि वे “पर्याप्त अच्छे” हैं या उनकी पृष्ठभूमि से “आच्छादित” हैं। सुसमाचार हर व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत निर्णय लेने के लिए बुलाता है।

“क्योंकि हम सबको मसीह के न्यायासन के सामने प्रकट होना
है…” (2 कुरिन्थियों 5:10)

निष्कर्ष

यिर्मयाह 31:30 हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर हमें व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार ठहराता है। मसीह के द्वारा बनाए गए नए संधि के अंतर्गत, उद्धार व्यक्तिगत है—और न्याय भी। पर अच्छी खबर यह है कि अनुग्रह भी व्यक्तिगत है। परमेश्वर हर उस व्यक्ति को जो यीशु पर विश्वास करता है नया दिल, क्षमा और अनंत जीवन देता है।

“क्योंकि जो कोई प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा।” (रोमियों 10:13)

यदि यह संदेश आपके लिए प्रासंगिक है, तो इसे आज ही किसी के साथ साझा करें। शायद यह वही सत्य हो जिसे उनकी आत्मा सुनना चाहती है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp